(1)

BA-III (H)
मैथिली
पेपर - ६E

प्रो० रंजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

पद्यहीन नग्न गाछ
(lecture-two)

## 'राधिका' कविताक भावार्थ

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' जी मातृभाषा मैथिली के परम भक्त, समाज सुधारक, साम्यवादक परम उपासक, निर्भीक साहित्यकार, प्रगतिवादी

विचारधारा मे आकंठ, साम्यवादक प्रबल समर्थक गरिबीमे यथार्थक अनुभूतिसँ विभूषित सामन्तवादी विचारधाराक कट्टर विरोधी, एक सहज साहित्यकार आ भावी पीढ़ीक लेल प्रेरणाक स्रोत छलाह।

'पत्रहीन नग्न गाछ' कविता संग्रह मे संगृहित साधिका कविताक रचनाकार यात्रीजी छलाह। यात्रीजी वस्तुतः सब वर्गक लोकैं संग लऽ क चलबाक आग्रही छलाह। बापपित्ती आ पितामधारी बूढ़ वरक चढ़कु-भतकु द्वारा देखलाहीओ कल्पना छलाहि जे स्त्रीक हृदय आब हाहाकार नहि ओ शिक्षित भऽ कऽ आत्मनिर्भर होती आ स्वतंत्रताक संग अपन जीवन यापन करतीह। आ से ओ भेल साधिका / साधिका आर किओ आन नहि आधुनिक कालक शिक्षित कन्या छिकीह। साधिका कन्यादान बुच्चीदाइ नहि छिका जेना

यथा — "

गोर - गहुमा काँति
देह नमछर आ छुरबगर मुँहकटगर
ठोर लालेलाल
कारि केश - वेश कपचल कृष्ण
कुंतल जाल
भऔंह केश पिजौल

③

मर्मवेधी तावुसन कजरैल आँखिक कोर
अनावृत बीसो नखक उजर पीठ
हरित वसना आइ कालहुक राधिका
देवि स्कूटर वाहिनी घुरि आउ संध्याकाल
कोनो होटल मध्य बाट तकैत छथि
बाँके बिहारी लाल।"

कवि कहि रहल छथि जे स्वच्छन्द यात्रामे स्त्रीक देह-मन-आत्मा चिर्री-चिर्री भ' गेलैक। मुदा आब ओ स्त्री साहस आ आत्मविश्वासक प्रतिमूर्ति अछि। 'राधिका' शीर्षक कवितामे 'बीसो नखक' एक शब्द विशेषार्थ थिक। स्त्री जाति स्वतंत्रता सँ स्वच्छन्दतामे परिणत भ' जयबाक निहितार्थ छैक। बान्हसँ बान्हल - छेकल पानि जेना बन्हन तोड़ि उत्फाल मचबैत छैक। राधिका कें चित्रण ओहि स्वभाविकताक प्रतीक अछि। आब ओ राधिका धरतीक समा जयबाक कामना करयवाली नहि रहली, परिवर्तित सम्पन्न व्यक्तिक प्रतीकाक

रहए कोना अछि- बात तकैत कवि कहै बिहारीलाल।

वस्तुतः पाश्चात्य सभ्यता भारतीय ललनाक शालीनताकेँ जड़िमूलसँ उखाड़ि देलक अछि। सभ्यताक रंगमे रंगल अछि राधिका जे अपन प्रेमक प्रतीक्षा कए रहल अछि कहै बिहारीलाल।

= समाप्त =

Sanjit
25/04/20